राजस्थान मसाला संघ इंटरनेशनल बिजनेस मीट के अवसर पर माननीय अध्यक्ष जी का सम्बोधन

मुझे बहुत प्रसन्नता हुई कि राजस्थान की इस शौर्य और वीरता की धरती, त्याग-तपस्या की धरती, सेवा और समर्पण की धरती के माध्यम से आज देश और दुनिया को बताया गया है कि यह मसाला प्रोडक्शन की भी बड़ी धरती है। मुझे जानकारी मिली है कि भारत के 25 परसेंट से अधिक मसाले के कल्टीवेशन में, प्रॉसेज में, पैकिंग में तथा एक्सपोर्ट में राजस्थान की धरती का बहुत बड़ा योगदान है।

पहले मैं समझता था कि मेरे हाड़ौती क्षेत्र के धनिये की चमक केवल भारत में ही नहीं, दुनिया के अंदर है, लेकिन आज जब मैं गया तो मैंने देखा कि राजस्थान के अलग-अलग क्षेत्रों के अंदर जिस तरीके से मसाला एक उद्योग के रूप में स्थापित है और विशेष रूप से कुछ स्पाइसेज, कुछ मसालों के उत्पादन का तो बहुत बड़ा हिस्सा राजस्थान में होता है। मैंने विशेष रूप से देखा कि किस तरीके से हमारा जीरा और मेथी, मेथी के बारे में तो बताया गया कि 70 परसेंट मेथी का उत्पादन केवल राजस्थान में होता है, इसके लिए मैं आपको साधुवाद देता हूँ। चाहे रावला मंडी का धनिया हो, जोधपुर संभाग का जीरा हो, नागौर की कसूरी मेथी हो, बिलाड़ा की सौंफ हो, बीकानेर की मेथी हो, अजवाइन और मिर्ची इत्यादि मसाला प्रोडक्शन का एक बहुत बड़ा हब राजस्थान की धरती पर है। जब आप दुनिया के अंदर जाएंगे तो देखेंगे कि भारत के मसालों की डिमांड सबसे ज्यादा है। हम मिडिल ईस्ट के इलाके में जाते हैं तो मिडिल ईस्ट के इलाके के अंदर सबसे ज्यादा भारत के मसालों को पसन्द किया जाता है। अब कुछ यूरोप की तरफ बढ़ने लगे हैं। कई कंट्रीज, दक्षिण अफ्रीका के अंदर भी मैं गया, पूरी अफ्रीकन कंट्रीज के अंदर भी भारत के मसालों की डिमांड बढ़ रही है। यह आपका प्रयास है। आपके प्रयासों के कारण हमारे किसान समृद्धशील हो रहे हैं, प्रगतिशील हो रहे हैं। कम जमीन पर ज्यादा उत्पादन करके और उस

उत्पादन के बाद वैल्यू एडीशन करके उसको मसाले में प्रोसेस करने का काम आप लोग करते हैं। वैल्यू एडीशन किसी भी खाद्यान्न का हो, मसाले का हो या अन्य कोई भी चीज, जो धरती से उगती है, सभी प्रोडक्ट, उसमें केवल खाद्यान्न ही नहीं है, दवाइयों के रूप में भी मसाला और जड़ी-बूटी का प्रयोग होता है और उसके प्रोडक्शन का बहुत बड़ा हब आने वाले समय में राजस्थान बनता जा रहा है। जब हम इस वैल्यू एडीशन करने की इंडस्ट्रीज़ को गांवों में लगाना शुरू करेंगे, ग्रामीण इलाकों के अंदर शुरू करेंगे, तो हमारी ग्रामीण अर्थव्यवस्था भी मजबूत होगी और किसान की आर्थिक स्थिति भी मजबूत होगी। बदलते भारत के अंदर जहां हम परम्परागत खेती करते हैं, इस परम्परागत खेती के साथ जैविक खेती के रूप में हम कदम बढ़ा रहे हैं, प्राकृतिक खेती के रूप में कदम बढ़ा रहे हैं।

लेकिन उसके साथ-साथ हमें मसाला प्रोडक्शन का हब भी बनाने की आवश्यकता है। मैंने अभी ज़ीरे की चमक और खूशबू को देखा। नागौर की मेथी को देखा। मैंने यहां के धनिए को देखा। मैंने यहां की मूंगफली को देखा। ऐसे बहुत सारे आइटम्स जिनमें विशेष रूप से कई प्रोडक्शन तो हमारे यहां ही होते हैं, उनको देखा। यह शायद मेरी पहली जानकारी थी कि नागौर के अंदर जो कस्तूरी मेथी होती है, देश और दुनिया में उसके 70 पर्सेंट प्रोडक्शन का हब राजस्थान ही है। हमें इस दिशा की ओर बहुत से कदम बढ़ाने की आवश्यकता है। इस नए बदलते परिप्रेक्ष्य के अंदर हम किसानों को किस तरीके से जागरूक करें, उनकी एक-एक जमीनों को साथ मिला कर हम किस तरीके से एफपीओ बनाना शुरू करें और उन एफपीओ को बनाने का काम भी आप करें, उनका सहयोग करें कि किस तरीके से फार्मर प्रोडक्शन ऑर्गेनाइज़ेशन अलग-अलग इलाके के किसान सामूहिकता के साथ खेती करें। यह प्रमाणित रूप से कर के साबित करें कि जो आपका एफपीओ है, वह आपको परंपरागत खेती से, जो नई आधुनिक खेती है, जिसमें हमारे जितने भी कृषि के नए स्टार्टअप्स हैं, नए इनोवेशन्स हैं, नई रिसर्च हैं, उनका उपयोग करते हुए किसान के प्रोडक्शन को बढ़ाने का काम करें। अभी 24-25 को कोटा में कृषि महोत्सव के

अंदर देश के नौजवानों ने जो बौद्धिक क्षमता, इनोवेशन, रिसर्च की क्षमता के जो नए स्टार्टअप्स एग्रीकल्चर के सैक्टर में तैयार किए, नई तकनीकी खेती, वैज्ञानिक खेती और नई तकनीकी यंत्रों का उपयोग करते हुए हम अपनी जमीन को भी बचाते हुए प्रोडक्शन को बढ़ाने और प्रोडक्शन के साथ उसकी वैल्यू एडीशन बढ़ाने के लिए किस तरीके से दिशा होती है, उसके लिए 2 दिन मैंने कृषि महोत्सव का मेला लगाया।

माननीय प्रधान मंत्री जी ने दिल्ली के पूसा में उस मेले का उद्घाटन किया था तो मुझे वहां जाने का सौभाग्य मिला और मैंने देखा कि किस तरीके से कृषि स्टार्टअप के अंदर कृषि की नई तकनीकी, वैज्ञानिक तकनीकी, नई तकनीकी के यंत्रों का उपयोग, जिसकी जानकारी अभी किसान के अंतिम छोर तक नहीं पहुंची है, उस काम को अब आपको करना है। यहां 2 दिनों तक जो सेमीनार होगा, चर्चा होगी, संवाद होगा, मंथन होगा, विचार होगा, चिंतन होगा, अपने-अपने अनुभवों को साझा करेंगे। यह मान कर चलें कि लोकतंत्र में सबसे बड़ी ताकत विचारों का आदान-प्रदान है। इनोवेशन को सीखना, चिंतन करना और अच्छी प्रैक्टिसेज़ से शनै:-शनै: बदलाव की ओर बढ़ना है। इसके लिए जितना प्रयास करेंगे, राजस्थान और देश के किसानों की उतनी ही समृद्धि ला पाएंगे। आपके प्रयासों से किसान की जिन्दगी बेहतर होगी क्योंकि आपका किसान से बड़ा निकट का संबंध है। अच्छा उत्पादन होगा, क्वालिटी उत्पादन होगा, क्वालिटी वाले बीज मिलेंगे, नए इक्विपमेंट्स, नए संयंत्र होंगे, वैज्ञानिक खेती करने के जितने नए-नए तरीके आप बताएंगे, उतने ही वे अपने उत्पादन को बढ़ाने का काम करेंगे क्योंकि गांव में जब तक आप ज़मीन पर किसी चीज को प्रैक्टिकल करके नहीं बताएंगे, तब तक किसान परम्परागत खेती को छोड़ने वाला नहीं है। इस 75 सालों की यात्रा में बहुत कुछ परिवर्तन हुआ है, लेकिन दुनिया में जिस देश ने कृषि क्षेत्र में बहुत जल्दी परिवर्तन किया, वह देश आर्थिक रूप से मजबूत होता चला गया। हमारी 60 से 70 प्रतिशत अर्थव्यवस्था, कृषि आधारित है। मान लीजिए कि आप मसालों के निर्यातक हैं। आप किस पर निर्भर हैं? आप

किसान पर निर्भर हैं। अगर अच्छी फसल पैदा होगी, क्वालिटी वाली फसल पैदा होगी, ज्यादा उत्पादन होगा, तो आप उसको ज्यादा अच्छे तरीके से वैल्यू एडीशन करके देश और दुनिया के अन्दर और मार्केट ढूँढ़ने का काम करेंगे। जितना उत्पादन अधिक होगा, उतना ही आप नए मार्केट डेवलप करने का काम करेंगे। इसलिए आपकी जो यह दो दिनों की 'मीट' है, उसमें हमारा फोकस किसान पर होना चाहिए, उत्पादन पर होना चाहिए। कई अच्छी कंपनियां अगर समझदारी से काम करती हैं तो वे अपने बीज, क्वालिटी के बीज, कितना पेस्टीसाइड का उपयोग करना है, कम पेस्टीसाइड और कम उर्वरकों का उपयोग करना है, वे करेंगे। जिस किसान ने कम उर्वरक और कम पेस्टीसाइड्स का प्रयोग करके अपने उत्पादन को बढ़ाया है, अगर आप उसका उदाहरण देंगे तो फिर किसान उसी दिशा की ओर काम करने का प्रयास करेंगे। इसलिए मेरा कहना है कि आपको कुछ गांवों को गोद लेकर, उनसे बात करके हमें फार्मर्स प्रोडक्शन ऑर्गेनाइजेशन के साथ मिलकर या फार्मर्स प्रोडक्शन एसोसिएशन आप बनाकर काम करें। अभी हम यह लक्ष्य बनाकर चलें कि आने वाले समय में देश के अन्दर और देश के बाहर भी, विभिन्न प्रकार के मसाले, चाहे खाने के रूप में काम आएं या दवा के रूप में काम आएं, या आयुर्वेद में काम आएं, इस दिशा में हम काम करेंगे। अगले साल जब यह 'मीट' हो तो आप मंथन करेंगे कि हम किस स्थिति तक पहुंचे हैं। जब हम हर कार्य का मूल्यांकन करते जाएंगे तो निश्चित रूप से उसके बेहतर परिणाम आते जाएंगे क्योंकि चर्चा, संवाद के बाद मूल्यांकन भी जरूरी है। संसद में कहते हैं कि आप चर्चा कीजिए, संवाद कीजिए, बातचीत कीजिए, डिबेट कीजिए। उसके मंथन से जो अमृत निकलेगा, उससे कल्याण होगा।

आपके मंथन से जो विचार-विमर्श निकलेगा, उससे देश व राजस्थान के किसानों का कल्याण होगा। मुझे आशा है कि आने वाले समय में आपके प्रयासों से राजस्थान के किसान आर्थिक रूप से मजबूत होंगे और 'आत्मनिर्भर भारत' का हमारा जो सपना है, वह भी पूरा होगा। इसके लिए मैं आप सब को विशेष रूप से धन्यवाद देता हूं।

मुझे चिंता है कि लोग गांव से शहर की ओर पलायन कर रहे हैं। यदि हमें उस पलायन को रोकना है तो ग्रामीण क्षेत्र के अंदर इंडस्ट्रीज को डेवलप करना पड़ेगा और वहाँ लोगों को रोजगार उपलब्ध कराना पड़ेगा। गांव के आसपास रोजगार उपलब्ध कराने के लिए मुझे लगता है कि राजस्थान स्पाइस एसोसिएशन से ज्यादा महत्वपूर्ण कोई संगठन नहीं हो सकता। मैं हर वर्ष आपके साथ बैठूंगा। मेरे संबंध में आपको किसी भी तरह की कोई कठिनाई हो, कोई विषय हो, आपको एक्सपोर्ट करने में, आपके नए एक्सपोर्ट मार्केट को डेवलप करने में, किस कंट्रीज के अंदर हम अपने मसाले को एक्सपोर्ट कर सकते हैं, उनकी क्या-क्या परेशानी है, उन परेशानियों का क्या सॉल्यूशन हो सकता है, मैं आपके साथ हूं। हर समस्या का समाधान निकलेगा और इसे हमें निकालना है। असंभव जैसी हर चुनौतियों से लड़ना और उन चुनौतियों से समाधान निकालना, यह भारत के राजनैतिक नेतृत्व की ताकत है। दुनिया में माननीय नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में हम देख रहे हैं कि हमारा देश किस तरीके से आगे बढ़ रहा है। उनका भी बार-बार यह सपना रहता है कि अगर हमें अपने देश को विकसित राष्ट्र बनाना है तो हमारे गांव के अंतिम छोर पर बैठे किसान की जिंदगी को समृद्ध और खुशहाल करना होगा, तब हम विकसित राष्ट्र के सपनों को पूरा कर पाएंगे। उस विकसित राष्ट्र के सपनों में आपका बहुत बड़ा योगदान है।